The efforts of GVT-Jhabua team towards attaining Geographical Indication (GI) registration for Kadaknath is in news. The chicken will now be registered by the name of "Jhabua Kadaknath".

झाबुआ के नाम से होगा कड़कनाथ का जीआई टेग

सिर्फ कड़कनाथ नहीं, अब 'झाबुआ का कड़कनाथ' कहें

वीरेंद्र भट्ट >> पेटलावद

जिस तरह से बाग प्रिंट को बाग के नाम से, महेश्वर साड़ियों को महेश्वर के नाम से और दार्जिलिंग चाय को दार्जिलिंग के नाम से ही जाना जाता है, वैसे ही अब कड़कनाथ मुर्गे को 'झाबुआ के कड़कनाथ' के नाम से पहचाना जाएगा। ये संभव हो पाएगा झाबुआ के कड़कनाथ को जियाग्राफिकल इंडिकेशन टैग मिलने के बाद। भारत सरकार की संस्था द्वारा जारी किए जाने वाले टैग ऊपर बताए गए उत्पादों को पहले से जारी किए जा चुके हैं। ये टैग औद्योगिक उत्पादों के लिए दिए जाते हैं।

जिले की पहचान बने कड़कनाथ मुर्गे को अब औद्योगिक रूप से अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलेगी। जियोग्राफिकल इंडिकेशन रजिस्ट्री के जिले की एक संस्था द्वारा किया गया आवेदन अंतिम दौर में है। जनवरी में भारत सरकार की इस संस्था की होने वाली बैठक के बाद संभवत: झाबुआ के कड़कनाथ को जीआई टैग दे दिया जाएगा। भारत सरकार की भारतीय बौद्धिक संपदा संस्था द्वारा ये रजिस्ट्री की जाती है। इसे विश्व व्यापार संगठन भी मान्य करता है। ये रजिस्ट्रेशन जियोग्राफिकल इंडिकेशन्स ऑफ गुड्स (रजिस्ट्रेशन एंड प्रोटेक्शन) एक्ट 1999 के तहत किया जाता है। ये पेटेंट कराने जैसे काम से मिलता-जुलता है, लेकिन वो है नहीं। ये उत्पाद को उस स्थान के नाम से पहचान दिलाता है।

स्थान से होती है पहचान

भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री (जीआई रजिस्ट्री) औद्योगिक उत्पादों के संरक्षण के लिए की जाती है। कोई भी ऐसा उत्पाद जो किसी स्थान विशेष से उत्पन्न हुआ हो, उसके लिए जीआई टैग लिया जाता है। इस तरह की रजिस्ट्री के बाद उस उत्पाद के नाम के साथ स्थान विशेष का नाम जोड़ दिया जाता है। ऐसा होने पर विश्व में कहीं भी व्यापारिक या औद्योगिक तौर पर इस उत्पाद को इसी नाम से पहचाना जाता है। यानी एक बार टैग मिलने के बाद संबंधित उत्पाद को दुनिया में किसी दूसरे स्थान पर रजिस्टर नहीं किया जा सकता। अभी तक बाग प्रिंट, दार्जिलिंग चाय, महेश्वर साड़ियां, कांजीवरम साड़ियां, भागलपुर सिल्क, बैंगलोर के नीले अंगूर और लखनऊ की जरदोजी को जीआई टैग मिल चुका है।

» जियोग्राफिकल इंडिकेशन रजिस्ट्री की प्रक्रिया अंतिम दौर में

सालभर पहले आवेदन

ग्रामीण विकास ट्रस्ट संस्था ने जीआई टैग के लिए आवेदन किया था। उन्हें तकनीकी समस्या आ रही थी। इसलिए विभाग ने पूरा सहयोग किया और उन्हें दस्तावेज उपलब्ध कराए। अब झाबुआ के कड़कनाथ को जीआई टैग मिलने में कोई बाधा नहीं है। **-डॉ. भगवान मदनानी, डिप्टी डायरेक्टर, पशुपालन विभाग, भोपाल**

अब अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिलेगी

हमारी कोशिश है कि कड़कनाथ को झाबुआ के नाम से अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिले। उम्मीद है जनवरी तक इसे भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री मिल जाएगी।

-डॉ. आरके रोकड़े, संचालक, पशुपालन विभाग, भोपाल